तेवरी-पक्ष

[जनजागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी]

Scanned by CamScanner

[redacted]

तेवरी-पक्ष

[redacted]-जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी)

वर्ष–तीन अंक–एक जुलाई, अगस्त, सितम्बर–१९८८

संरक्षक–श्री रामचरन गुप्त

सम्पादक–रमेशराज

सह-सम्पादक–सुरेश त्रस्त

योगेन्द्र शर्मा

बिजयपाल सिंह

रामगोपाल शर्मा 'गोपेश'

मूल्य–एक प्रति, तीन रुपया

वार्षिक–दस रुपया

सम्पादन/संचालन-अवैतनिक

पत्रिका परिवार

सर्व श्री श्याम बेबस

दर्शन-बेजार

कुमार अशोक

गजेन्द्र बेबस

वीरेन्द्रकुमार सिंह

देशबन्धु अग्रवाल

ब्रह्मदेव शर्मा देव

अनिल कुमार अनल

सम्पर्क–सार्थक-सृजन प्रकाशन

१५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़–२०२००१

—समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

Scanned by CamScanner

तेवरीकारों ने तेवरी को जब एक स्वतंत्र और मौलिक विधा के रूप में स्थापित करने के प्रयास किये तो साहित्यकारों और सजग पाठक वर्ग की ओर से बड़े ही जोरदार अन्दाज में तेवरी के प्रति विभिन्न प्रकार की आशंकाएँ व्यक्त की गयीं। तरह-तरह के ऊल-जुलूल एवं सार्थक प्रश्न उछाले गये।

तेवरी के विरोधी और गजल के हिमायती रचनाकार यह दावा लेकर मैदान में कूद पड़े कि तेवरी कुछ नहीं, सिर्फ गजल ही है।

कुछ आग्रही-दुराग्रही रचनाकारों ने तो तेवरी विवाद को खड़ा करने में यहाँ तक हद कर दी कि वे तेवरीकारों के प्रति गाली-गलौज की शब्दावली पर उतर आये।

तेवरीकारों ने तेवरी को गजल से अलग करते हुए बार-बार यही प्रश्न दोहराये कि यदि तेवरी गजल है तो कैसे ? तेवरी के शिल्प व कथ्य की ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जो गजल से साम्य रखती हैं ? तेवरीकारों के इन ज्वलंत एवं सार्थक प्रश्नों के (जहां से बहस शुरू की जानी चाहिए) उत्तर देने के बजाय गजल के हिमायतियों ने बस यही रट लगायी कि गजल में भी वर्तमान जीवन की विसंगतियों, विकृतियों और व्यवस्था विरोध की अभिव्यक्ति हो सकती है। तब वह अपने मूलचरित्र (प्रेमिका से प्रेमपूर्ण बातचीत) में कितनी जिन्दा रह पाती है ? इस प्रश्न का उत्तर गजलभक्तों ने नहीं दिया। क्या एक ही प्रकार के चरित्र को दो प्रकार के विशेषणों से विभूषित किया जा सकता है ?

कुछ अन्य साहित्यकारों ने कहा कि तेवरी हिन्दी गजल है। यह हिन्दी गजल क्या होती है ? और इसका प्रारूप क्या है ? विश्वास है इन प्रश्नों के

Scanned by CamScanner

कविता गोष्ठी के साथ सुकवि मोहन स्वरूप की विदाई

१५ अगस्त '८८--समकालीन कविता के प्रतिनिधि युवाकवि श्री रमेशराज के ईसा नगर निवास पर सुकवि श्री मोहन स्वरूप को सार्थक-सृजन संस्था की ओर से एक कविता-गोष्ठी के साथ ससम्मान विदाई दी गयी। श्री मोहन स्वरूप यहाँ अपर जिलाधिकारी (वित्त व राजस्व) के पद पर सेवारत थे, जो कि अब अपर जिलाधिकारी (नगर) इलाहाबाद के पद पर स्थानांतरित हो गये हैं।

कविता-गोष्ठी की अध्यक्षता प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री वेद प्रकाश 'अमिताभ' ने की। गोष्ठी के संचालन में श्री रमेशराज ने कहा कि–"श्री मोहन स्वरूप ने एक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य करते हुए तमाम तनावों और पीड़ाओं को झेला और भोगा, लेकिन अपनी सम्वेदन-शीलता-सदाशयता को कभी मरने नहीं दिया। अपने रचनाकार को हर स्तर पर जिंदा रखा। श्री मोहन स्वरूप जी ने हमेशा कार्य करने में निष्ठा रखी, प्रचार-प्रसार में कतई नहीं। वे हमेशा असहाय और पीड़ित लोगों के काम आये किन्तु कभी लोगों का अपने मद में इस्तेमाल नहीं किया। कथित नेताओं, पीतपत्रकारों की दलालसंस्कृति से वे हमेशा दूर रहे। यही वजह है कि वे आज अलीगढ़ से कोई भी, कैसा भी दाग अपने दामन पर लेकर नहीं जा रहे हैं। जो विरले ही अधिकारियों के साथ होता है।" उन्होंने आगे कहा कि "श्री मोहन स्वरूप को विदा करते हुए निश्चित रूप से हमारी पूरी संस्था विछोह की अनुभूति कर रही है। लेकिन श्री मोहनस्वरूप से हम लोगों का जुड़ाव वैचारिक है; जो हमेशा रहेगा। वे एक विचार के रूप में सदा हमारे आदर्शों के साथ रहेंगे।"

तत्पश्चात् श्री मोहनस्वरूप ने काफी दुखी स्वर में कहा कि–"मुझे अलीगढ़ में जितना अच्छा साहित्यिक परिसर मिला, वह शायद ही साहित्यकारों के केन्द्र इलाहाबाद में मिले। मेरी बेहद इच्छा थी कि मैं अभी यहाँ और रहकर थोड़ा-बहुत सृजन करता और साहित्य का जी भर के आनन्द लेता। इस प्रशासनिक व्यस्तता और वर्तमान व्यवस्था में रहकर मुझे आप लोगों से जुड़के जीवन मिलता है तथा थोड़ा-बहुत अपने आपको जिन्दा महसूस करता हूँ। मेरी आप लोगों से अपील है कि आप सब अपनी साहित्यिक गतिविधियों को बरकरार रखेंगे। तथा इस जुड़ाव को कभी खत्म नहीं होने देंगे। चूंकि साहित्य ही मानव की प्रगति एवं

Scanned by CamScanner

उसकी सांस्कृतिक परम्परा को जीवन्त बनाये रखने का एक सशक्त और सार्थक माध्यम है।''

श्री रामगोपाल वार्ष्णेय ने कहा कि--''मोहन स्वरूप जी का इलाहाबाद जाना हमसे विछोह नहीं बल्कि हमारी आत्मीयता और रचनात्मक साझेदारी का इलाहाबाद तक विस्तार है। सम्बन्ध चूंकि विश्वास और निष्ठा पर टिके हुए हैं, इसलिए खत्म होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

अन्त में गोष्ठी के अध्यक्ष श्री वेद प्रकाश अमिताभ ने श्री रमेशराज की ही बात की पुष्टि करते हुए कहा कि--''मोहन स्वरूप जैसे कर्मठ, और संवेदनशील अधिकारी कम ही मिलते हैं। जब तक मैं मोहनस्वरूप से नहीं मिला तब तक मेरी भी यही धारणा थी कि अधिकारी सिर्फ अधिकारी होता है, उसका आम जनता या साहित्य आदि से कोई लेना-देना नहीं। श्री मोहन स्वरूप से मिलकर मेरी यह धारणा खण्डित हुई।'' उन्होंने आगे कहा कि-''एक प्रशासनिक अधिकारी में साहित्य के प्रति इस प्रकार जुड़ाव-झुकाव अपवादस्वरूप ही दृष्टिगोचर होता है। भविष्य में अलीगढ़ को शायद ही ऐसा अधिकारी मिले।'

गोष्ठी में तेवरीकार श्री सुरेश त्रस्त, ब्रह्मदेव शर्मा और विजयपाल सिंह अपनी तेवरदार, तेज तर्रार, तीखी अभिव्यक्ति की रचनाओं के लिए काफी अपील किये गये। श्री रामगोपाल शर्मा 'गोपेश' वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर प्रहारात्मक, यथार्थपरक लम्बी मुक्तछंद रचना के लिए काफी सराहे गये। गोष्ठी में श्री वेदप्रकाश 'अमिताभ' रामगोपाल वार्ष्णेय तथा रमेशराज की रचनाएँ भी प्रशंसनीय रहीं। इस गोष्ठी में कविताओं के प्रिय श्रोता श्री शंभूदयाल रावत एवं अन्य श्रोता भी उपस्थित थे। अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ ही संचालक ने समस्त कवि-बन्धुओं को आभार ज्ञापित करते हुए गोष्ठी के विधिवत् समापन की घोषणा की।

प्रस्तुति :

वि० पा० सिंह

Scanned by CamScanner

तेवरी-पक्ष

पाठकीय

अलीगढ़

'बंजामिन मोलॉइस स्मृति अंक'

सामग्री स्तरीय एवं समीक्षा स्तम्भ अच्छे बन पड़े है, किन्तु इतने अर्से से प्रकाशित होने वाली पत्रिका अभी तक अपनी हिन्दी जगत में अहम् भूमिका बना पाने में सक्षम प्रतीत नहीं होती।

—मदन मोहन उपेन्द्र

'बेंजामिन मोलॉइस' जैसे महान क्रान्तिकारी कवि के प्रति आपके द्वारा भाई विजयपाल सिंह के शब्दों में प्रस्तुत शब्द-श्रद्धांजलि व सम्मान, उस दिवंगत आत्मा को शान्ति भी देगी और साहित्यिक समाज आपको सम्मान भी।

—नीतीश्वर शर्मा 'नीरज'

'तेवरी-पक्ष' एक सशक्त मंच तथा सुदृढ़ सेतु का कार्य एक साथ सम्पन्न कर रहा है।

—डॉ० कमल पुन्जाणी

सीमित साधनों में जेहाद बोलते आ रहे हैं, यह अपने वक्त का आइना बनेगा।

—जितेन्द्र राठौर

सम्पादकीय को छोड़कर अन्य तमाम बहसें, लेख, विवाद व तेवरियाँ पन्ने भरने के लिए हैं।

—शिवकुमार थदानी

हर अंक में आप तेवरी के साथ उसकी महत्ता, गरिमा को रूपायित करते हुए, उसके स्वतंत्र अस्तित्व के लिए जूझ रहे हैं, यह एक सुखद एव दिलचस्प प्रयास है।

—निरंजन कुमार 'निराकार'

बंजामिन मोलॉइस स्मृति अंक मिला। अंक स्वयं पूरी क्रिया के साथ है। प्रतिक्रिया क्या लिखूं ?

—राजेन्द्र 'सोनी'

तेवरी परिचर्चा अंक–दो

आज की त्रासद स्थिति में जितना तीखा, धारदार, मारक लिखा जाय कम हैं। समग्र जीवन में कुरूपताओं की भीषण लहर आयी है······हम सभी को अपने

सांस्कृतिक ईमान की रक्षा के लिए विरोधी-विघटनमयी शक्तियों से जूझना है। काश! आपकी पत्रिका मासिक होती। —रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

तेवरी-पक्ष का सतत् प्रकाशन इसकी सार्थकता को सिद्ध कर रहा है।

—फूल चन्द्र 'मानव'

'तेवरी-पक्ष' सामान्य जन को केन्द्र बिन्दु बनाकर उसी को साहित्य में ला रहा है, इसलिए तेवरी कभी 'आउट ऑफ डेट' नहीं होगी। तेवरी का विरोध करना, सामान्य व्यक्ति का विरोध करना होगा, लोकतंत्र के 'लोक' पर कुठाराघात होगा।

—बाबूराम वर्मा

''यह खस्सी विचारधाराओं का परिणाम है'' शोक-संदेश ने झकझोर के रख दिया। —निशांत'

तेवरी के महत्व को लेकर डॉ० रवीन्द्र भ्रमर का लेख महत्वपूर्ण है।

—सतीश राठी

वैचारिकता एवं विविधता की दृष्टि से यह अंक वाकई भारी है। पहले हुए विचार-विमर्श के अनुसार इस अंक से पत्रिका के वैविध्य को बढ़ाने तथा कई विधाओं को इसमें स्थान देने का शुभारंभ करके सचमुच इसमें बढ़िया काम हुआ है।

—धीरेन्द्र शर्मा

तेज-तर्रार एवं संघर्षशील विचारधारा से ओत-प्रोत अंक मन को उद्वेलित कर कर गया। —मदनमोहन उपेन्द्र

पूरा का पूरा अंक मात्र रचनात्मक प्रयास को स्थापित करने की विला वजह जिदों से भरा पड़ा है। —कौशल पाण्डेय

कवितापोस्टर प्रदर्शनी विशेषांक

अंक बड़ा विचारोत्तेजक और जीवन के कुरूप यथार्थों की जर्राही करने वाला है। —रामेश्वर शुक्ल 'अचल'

पृष्ठ ४२ पर प्रकाशित कविता निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

—चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'

आज देश में जैसी परिस्थितियां बन रही हैं उसमें आक्रोश तथा तेवर से भरी कविताएं लिखने की प्रवृत्ति पनपे तथा बढ़े तो आश्चर्य न होगा। मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु मनुष्य ही है। प्रश्न ये हैं कि क्या ये तेवरी-कविताएं मनुष्य को बदल सकती हैं? मेरा विश्वास अभी टूटा नहीं है, शब्द की ताकत पर अभी यकीन है।

—डॉ० कमल किशोर 'गोयनका'

सम्पादकीय तेज है। एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि कबीर और तुलसी को आमने-सामने खड़ा कर देना बहुत अच्छा नहीं है। जिन्हें आप तुलसी की कमजोरी मानते हैं, वे कबीर में हैं और पर्याप्त मात्रा में हैं। —डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ

यह अपने ढंग का नया प्रयास है। —यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

आपका यह भावात्मक सार्थक कार्य अति उत्तम रहा। लगन टूटने न पाये। —ललित, सम्पादक सनीचर

वर्तमान व्यवस्था की डिटौल में कीड़े पड़ गये हैं। आपके जैसे सार्थक-सर्जक ही अपने कलम की धार से शोधित कर सकते हैं। आपके एकल सतत प्रयास का मैं अलीगढ़ प्रदर्शनी में प्रत्यक्षदर्शी हूं। ···मधुर नज्मी

आप लोग 'सार्थक सृजन' में लगे हैं। वस्तुतः शोषण के विरुद्ध यथार्थवादी दृष्टिकोण ही उपयुक्त हो सकता है। ···डॉ० मदन 'केवलिया'

सामग्री विचारोत्तेजक है। पत्रिका के शील को बनाये रखें।···डॉ० दिवाकर

आप इस प्रकार के आयोजनों में सरकारी अधिकारियों को भी शामिल कर पाते हैं। एक सीमा तक यह आपके क्रान्तिकारी मात्रावृत को बढ़ाने का प्रमाण है। लेकिन पग-पग पर सावधान रहने की जरूरत है। आप जिस आन्दोलन के अगुआ हैं इसमें समझौते का फिलहाल कोई महत्व नहीं है। ···डॉ० देशराज

आपसी सद्‌भाव के सिर पर मंडराते, अफवाहों-अविश्वासों के संकट के इस अभूतपूर्व चिन्ताजनक दौर में आपका 'कविता-पोस्टर आयोजन' बहुत ही राहत तथा सुकून देने वाला लगा। ···श्याम बिहारी सिंह 'श्यामल'

कविता को जन से जोड़ने का इससे सरल और क्या माध्यम हो सकता है? ···डॉ० दयाकृष्ण विजय

आज ऐसे आयोजनों की बेहद जरूरत है इस देश को। ···अनवर शमीम

'महत्वपूर्ण यह नहीं कि हम कविता लिख रहे हैं' शीर्षक से श्याम बेबस व मोहन स्वरूप की बातचीत पठनीय एवं प्रशंसनीय है। ···कुन्दनसिंह 'सजल'

इससे बढ़कर प्रसन्नता की और क्या बात हो सकती है कि आपको गरीबों को उठाने, जाग्रत करने के सद्‌प्रयासों में प्रशासन का भी सहयोग मिला। ···बाबूराम वर्मा

युग को एक नवीनतम धरातल पर उतारने के पुरजोर प्रयास की सम्भावना सहज ही आंकी जा सकती है। ···इन्द्र मोहन मिश्र

Scanned by CamScanner

'इतिहास घायल है' तेवरी संग्रह-3 पर प्राप्त कतिपय पत्रांश

एक अति सामान्य पुस्तक दिखने पर भी, इस पुस्तक की सहज ईमानदार और समय-प्रतिबद्ध रचनाओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया। ...डॉ० सूर्य बाला

इस संग्रह की रचनाओ को अगर तेवरी कहा जाय, तो निश्चय ही विधागत इतिहास की महत्वपूर्ण अंश कहलाएंगी। तेवरी-संग्रह-३' के रूप में आपकी यह कृति निश्चय ही सोद्देश्य अभियान की सार्थक कड़ी है। ...महेश अनघ

आपके. तथा कुछ अन्य तेवरीकारों के कल्टीवेशन को देखकर मैं बेलौस कह सकता हूं कि कथ्य की सम्प्रेषणीयता जितनी तेबरीकारों में है, गजलकारों में कतई नहीं। ...मधुर नज्मी

राष्ट्र और समाज के प्रति सच्चे प्रेम और सहानुभूति से प्रेरित सभी युवा कवियों की रचनाएं बहुत मार्मिक हैं। ...डॉ० विश्वनाथ 'शुक्ल'

यदि पूर्वज का घायल होना युवाओं की मुट्ठियां नहीं बंधवायेगा तो वर्तमान नपुंसक कहलाएगा। कलम से उठी आग लोहार की भट्टी की आग बने, तब सार्थक है, मात्र भस्म करने वाला दावानल पर्याप्त नहीं। ...मुकुट सक्सेना

इस संग्रह की तमाम तेवरियां आजादी के पश्चात की राजनीतिक त्रासदी के खिलाफ एक असरदार आवाज बुलन्द करने में सक्षम हैं। ...कुन्दन सिंह 'सजल'

बदलते युग के मापदण्डों की समीक्षा करते हुए काव्यगत प्रवाह बढ़ाये जा रहे हो, इसके लिए हार्दिक बधाई। ...ताराचन्द पाल 'बेकल'

तेवरी का यह लक्ष्य अनुचित नहीं है। ...बाबूराम वर्मा

आदि से अन्त तक इस अलाव की आग एक-सी तपिश लिये हुए है। एक-एक पृष्ठ अपने समय का इतिहास संजोए हुए है। ...नीलीश्वर शर्मा 'नीरज'

सभी तेवरियों के तेवर देखते ही बनते हैं। ...नीलम

Scanned by CamScanner

हुजूर ! सरकार ! मेरे परवर दिगार !
आपकी मोहक मुस्कान को सलाम
आप के दूर दर्शन के पर्दे को आदाब
आप के जनसंचार माध्यमों को नमस्कार

खेल आप के हाथ में है मि० क्लीन
खेल आपके हाथ में है मि० पायलट
आप के सर्कस के जोकरों को मुबारकबाद
ये मैदान मुबारक, ये पंडाल मुबारक
[हम मवेशियों की जमात मुबारक]

खेल चालू आहे श्रीमान्
खेल देश-विदेश तक फैला है श्रीमान्
खेल लाजवाब है श्रीमान्
[क्योंकि आप खेल रहे है]

आप महान हैं, अधीश्वर
आपका परिवार महान, अधीश्वर
आप के दोस्त महान, अधीश्वर
अपनों के लिए आपका प्रेम महान
[शेष सब मूर्ख हैं अधीश्वर]

हे जन-गण-मन अधिनायक !
आप के देशप्रेम की बलैया
आप के विदेशप्रेम की बलैया
आप के सत्कर्मों की बलैया
आपकी रक्षा की बलैया
[आपकी सुरक्षा की बलैया]

हे भारत-भाग्य विधाता !
आपके भाषण धन्य हैं
आपके अनुशासन धन्य हैं
आपके रि-क्रिएशन धन्य हैं
आपके जस्टीफिकेशन धन्य हैं
[और आपके राज्य में कराहते अस्सी करोड़ जन भी धन्य हैं]

Scanned by CamScanner

आप तो चक्रवर्ती हैं
आप तो सम्प्रभु हैं
आप ज्ञान हैं, विज्ञान हैं
आप सत्ता हैं, संविधान हैं
आप इतिहास हैं, आप विकास हैं
आप छन्द हैं, अनुप्रास है
[हम तो बकवास हैं, घास हैं, दास हैं]

आप के आलोचक देशद्रोही
आप पर उंगली उठाने वाले गद्दार
आपकी शिकायत करने वाले मक्कार
आपके खेल को गन्दा कहने वाले हराम खोर
आपसे जीने का हक मंगने वाले कामचोर
ये सब बतनफरोश है
[क्योंकि आप ही निर्दोष हैं]

ये देश आपके परनाना का
ये देश आपके नाना का
ये देश आपकी माई का
ये देश आपकी भौजाई का
ये देश आपकी प्राईवेट लिमिटेड का
ये देश आपका, आपकी ससुराल का
[ये देश आपके नौनिहाल का]

आपने बहुत कुछ किया है
आप बहुत कुछ कर रहे हैं आका
आप को बहुत कुछ करना है मालिक
आप बहुत कुछ करेंगे अन्नदाता
[हम टी० वी० पर देखेंगे, रेडियो पर सुनेंगे, अखबारों में पढ़ेंगे]

हुजूर ! सरकार ! मेरे परवर दिगार !
आपके मदारी हैं, आपकी बीन हैं

खेल चालू आहे महा प्रभू !
सांप आपके, नेवले आपके
नियम आपके, तरीके आपके
चित भी आपकी, पट भी आपकी
आप सचमुच विकल्पहीन हैं !

[क्योंकि अकेले आप ही मि० क्लीन हैं]

धीरेन्द्र शर्मा
५१, श्रीश चन्द्र वसु मार्ग,
इलाहाबाद उ० प्रदेश–२११००३

वर्तमान स्थितियों में गोपियों का श्रीकृष्ण को संदेश–

चुटकी भर सम्मान की, रही समस्या रोज
ऊधौ एक मकान की, रही समस्या रोज
फटी रजाई भी नहीं घर में टूटी खाट
जाड़ों में मेहमान की, रही समस्या रोज

शतकों की परम्परा में एक अद्वितीय तेवरी-शतक

प्रेम न जानें श्याम

(शीघ्र प्रकाश्य)

मूल्य–बीस रुपये

कवि–रमेशराज

सार्थक-सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

हिन्दी काव्य में तेवरी

—डॉ० परमलाल गुप्त

कविता का लय अथवा संगीत से विशेष संबन्ध है। इसलिए पहले छन्दबद्ध रचना को ही कविता माना जाता था। निराला जी ने मुक्त छन्द का प्रवर्तन किया; परन्तु उसमें उन्होंने लय की रक्षा की। महादेवी वर्मा के गीतों की प्रमुख विशेषता उनकी संगीतात्मकता है। संगीत से संयुक्त होकर कविता का प्रभाव बढ़ जाता है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का कथन है--

केवल भावमयी कला ध्वनिमय है संगीत।
भाव और ध्वनिमय उभय जय कवित्व नवनीत।

कविता इसलिए श्रेष्ठ है कि इसमें भ व और ध्वनि दोनों का संगम होता है। परन्तु विकास के क्रम में कविता बार-बार बौद्धिक गद्यात्मकता की ओर बढ़ी और पुनः लय और संगीतात्मकता से जुड़ी। 'गीतों की संगीतात्मकता का व्यामोह छोड़ कर 'नई कविता' लगातार अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति में अंतर्मुखी, बौद्धिक और गद्यमय होती गयी, तब 'नवगीत' का आविर्भाव हुआ, जिसमें सहज संवेदना के साथ लय और संगीत की रक्षा की गयी। प्रगतिशील धारा के कवियों को यह नहीं रुचा, इसलिए उन्होंने 'नवगीत' का विरोध करते हुए बौद्धिक एवं गद्यात्मक लम्बी कविताएं लिखीं। 'नई कविता' की अंतर्मुखता इनमें बहिर्मुखता बनी। इन्हीं की प्रतिक्रिया में भाव एवं संगीत से युक्त 'गजल' का प्रचार हुआ और 'गजल' की प्रतिक्रिया में 'तेवरी'।

'गजल' मूलतया उर्दू की विधा है। गालिब, इकबाल, जिगर, फिराक गोरखपुरी, जोश मलीहाबादी, फैज आदि ने इसका व्यापक प्रयोग किया। गजल गायिकी-सहगल, बेगम अख्तर, मेंहदी हसन, गुलाम अली, मलिका पुखराज आदि ने भी इसे लोकप्रिय बनाया। हिन्दी में पहले भारतेन्दु, निराला, प्रसाद आदि ने इसका छुट पुट प्रयोग किया। परन्तु इसे हिन्दी रवानी के अनुकूल न पाकर छोड़ दिया। आधुनिक युग में दुष्यंतकुमार ने गजल का व्यापक प्रयोग करके और उसे हिन्दी के प्रवाह में ढालकर विधा की प्रतिष्ठा प्रदान की। इसके बाद तो शमशेर, सूर्यभानु गुप्त, शेरजंग गर्ग, बालस्वरूप राही चन्द्रसेन विराट, कुंअर बेचैन, नईम आदि तथा अन्य नवगीतकारों ने गजलें लिखी। 'गजल' का ही एक दूसरा रूप 'तेवरी' है। यद्यपि 'गजल' में भी वर्तमान जीवन की विसंगतियों और लोक-भावनाओं की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है तथापि 'तेवरी' के पक्षधर यह मानते हैं कि परम्परित रूप में 'गजल' उर्दू शृंगारिकता और संगीत जन्य कोमलता से मुक्त नहीं है, हो भी नहीं सकती। इसलिए 'गजल' को कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से ऐसा रूप दिया जाय कि वह सामाजिक

विषमता, तल्खी, जनाक्रोश और क्रान्तिकारी भावनाओं की सक्षम अभिव्यक्ति कर सके। 'तेवरी' के पक्षधर यह मानते हैं कि 'गजल' अपने परम्परित रूप में वीर भावों को जागृत नहीं कर सकती, उसमें क्रान्ति की ललकार का स्वर नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ दुष्यंत कुमार तथा अन्य गजलकारों ने सामाजिक विसंगतियों का जो चित्रण किया है, वह केवल एक करुण सोच उत्पन्न करता है। 'गजल' है ही ऐसी विधा जो संगीत के कारण बौद्धिक होने के बजाय सम्वेदनात्मक है। अब 'तेवरी के पक्षधरों को कहा जाय कि भाई 'गजल' आपकी क्रान्तिकारी भावनाओं को व्यक्त कराने में अक्षम है, तो कविता के दूसरे रूप विद्यमान हैं, उनमें अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करो। परन्तु उन्होंने ऐसा न करके 'गजल' के स्वरूप या तेवर में परिवर्तन करके 'तेवरी' विधा का प्रारम्भ किया है।

यद्यपि अनेक नये कवि तेवरी लिख रहे हैं तथापि इसके आन्दोलन का केन्द्र अलीगढ़ है। अलीगढ़ से 'हिन्दी-गजल' और 'तेवरी-पक्ष' दो पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। इसके अलावा इधर कई तेवरी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं, यथा—'अभी जुबाँ कटी नहीं (१९८३ ई०), कबीर जिन्दा हैं' (१९८३ ई०), 'इतिहास घायल है' (१९८५ ई०), 'एक प्रहार : लगातार' आदि। तेवरी' लिखने वाले कवियों में रमेश राज, अरुण लहरी, अजय अंचल, योगेन्द्र शर्मा, सुरेश त्रस्त, ज्ञानेन्द्र साज, राजेश मेहरोत्रा, गिरिमोहन गुरु, डा० देवराज, विक्रम सोनी, गजेन्द्र बेबस, बेजार, विजयपाल सिंह, अनिल कुमार, गिरीश गौरव, विन्देश्वर प्रसाद गुप्त, राजेन्द्र सोनी आदि प्रमुख हैं। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि इन कवियों ने 'गजल' के कोमल स्वरूप को समाप्त करके उसे अधिक जुझारू और आक्रोशमय बनाया है। दर्शन बेजार की ये पंक्तियाँ देखिए—

अब कलम तलवार होने दीजिए,
दर्द को अंगार होने दीजिए।
आदमीयत के लिए जो लड़ रहा,
मत उसे बेजार होने दीजिए।

इसी प्रकार—

शब्द अब होंगे दुधारी दोस्तो,
जुल्म से हैं जंग जारी दोस्तो।
सत्य को सम्मान देता कौन है ?
झूठ का सिक्का है भारी दोस्तो।

सभ्यताओं के सजे बाजार में,
बन गयी व्यापार नारी दोस्तो।
लूट में मशगूल है हर रहनुमा,
लुट रही जनता बिचारी दोस्तो॥

(इतिहास घायल है, पृष्ठ १९)

इन तेवरियों में पहली बात तो निराशा अथवा पलायन के स्थान पर संघर्ष-धर्मी चेतना और सकारात्मक या आशावादी दृष्टिकोण है। ये तेवरीकार दुष्यंत कुमार के इस दृष्टिकोण के कायल नहीं हैं--

यहां दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहां से चलें उम्र भर के लिए।

ये तो सीधे व्यवस्था को चुनौती देते हैं और कविता को व्यवस्था-परिवर्तन के हथियार के रूप में इस्तैमाल के पक्षधर हैं—

शब्दों में बारूद उगाना सीख लिया,
कविता को हथियार बनाना सीख लिया।

(रमेश राज, इतिहास घायल है, पृष्ठ ४४)

यहां तक कि प्रेमचन्द के होरी और गोबर के द्वारा सामंती एवं महाजनी शोषण को सहने की धारणा से भी ये सहमत नहीं हैं। रमेश राज ने 'अभी जुबां कटी नहीं' में इसी भावार्थ से सम्बद्ध तेवरी लिखी है। समाज-व्यवस्था के स्वरूप के प्रति इनका दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है ; परन्तु ये सामाजिक न्याय के पक्षधर हैं और ऐसी हर परम्परा को तोड़कर विद्रोह करना चाहते हैं, जो आम आदमी के शोषण और सामाजिक अन्याय को प्रश्रय देती है। डॉ० देबराज की ललकार भरी ये पंक्तियां देखिए--

हमारे पूर्वजों को आपने ओढ़ा बिछाया है,
कफन तक नोंच डाला, लाश को नंगा लिटाया है,
जमाखोरो कुशल चाहो अगर तो ध्यान से सुन लो,
निकालो अन्न निर्धन का जहां तुमने छुपाया है।

(कबीर जिन्दा है)

Scanned by CamScanner

स्पष्ट हैं कि 'तेवरी' में 'गजल' की तरह भाषा और शिल्प के साज-संवार की कोशिश नहीं की गयी है। भाषा सपाट, पर ओज भरी है। 'तेवरी' को गाया जा सकता है; परन्तु इसकी रचना गजल की गायिकी के उपयुक्त नहीं होती। वैसे मूल रूप में 'तेवरी' गजल से अलग नहीं है। इसलिए कुछ लोग इसे 'गजल' या नई 'गजल' ('नई कविता' के तर्ज पर) कहना चाहते हैं। 'तेवरी' के पक्षधर इसे हिन्दी कविता की नयी और अलग विधा मानते हैं। उनका तर्क है कि 'यदि किसी रचना के कथ्य या शिल्प में क्रान्तिकारी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है तो वह अपनी मौलिक पहचान खो देती है अथवा नहीं ? यदि वह क्रान्तिकारी परिवर्तन के साथ अपनी मौलिक पहचान खोती है, अपने पुराने रूप को त्याग कर एकदम नये रूप में प्रस्तुत होती है तो उसे पुराने ही नाम से पुकारा जाना नितांत नासमझी से युक्त गैर जिम्मेदाराना कार्य होगा। ठीक इस तरह जैसे यदि कोई वेश्या वेश्यावृत्ति को त्याग कर अपना घर बसा एक आदर्श पत्नी की भूमिका अदा करती है, लेकिन हम उसे फिर भी 'वेश्या' ही सम्बोधित करते हैं।' (विजय पाल सिंह–तेवरी-पक्ष, बेंजामिन मोजोइस स्मृति अंक, पृष्ठ ८) वह तर्क इस रूप में बहुत सही है कि विचार-पक्ष की प्रधानता होने के कारण 'तेवरी' में 'गजल' के कलात्मक पक्ष का जो ह्रास हुआ है, उससे यह 'गजल' से भिन्न तो हो ही गयी है, सामाजिक उपादेयता के बावजूद इसके काव्यात्मक मूल्य पर भी कुछ प्रश्नचिह्न लग गया है। आगे इसका क्या स्वरूप बनता है, कहीं इसका लोप तो नहीं हो जाता अथवा प्रगतिवादी चौखटे में फिट होकर ('नवगीत' से 'जनवादी गीत' की तरह) अपनी पहचान तो नहीं खो देता, यह देखना है।

डॉ० परमलाल गुप्त
एस०-एच० ६, गोपाल कॉलोनी,
शास्त्रीनगर, सतना-४८५००१ (म० प्र०)

तेवरी विधा के चार महत्वपूर्ण संग्रह

१. अभी जुबाँ कटी नहीं (सम्पादक–रमेश राज)
२. कबीर जिन्दा है (सम्पादक–रमेशराज)
३. इतिहास घायल है (सम्पादक रमेश राज)
४. एक प्रहार : लगातार (कवि–दर्शन बेजार)

प्राप्ति स्थल :

सार्थक-सृजन प्रकाशन,
१५/१०६, ईसा नगर, अलीगढ़-२०२००१

सामंती दोपहर में

कूप तरसते नीर को, मिटती है कब प्यास।
सूखी हैं नदियां सभी, तट भी हुए उदास॥

लिख-लिख पाती भेजता, यह मौसम प्रतिकूल।
कंधे चढ़कर चल रही, पथ की अंधी धूल॥

टंगी हवा है नीम पर, झुलस उठी है छांव।
सामन्ती दोपहर में, बन्दी है हर गांव॥

आंखों में चुभने लगी, तेज किरच बन धूप।
सूनी,सूनी मांग––सा, लगता उजड़ा रूप॥

सबको अपनी है पड़ी, बंद हैं मन के द्वार।
रह-रहकर चुभने लगी, सुधियों की तलवार॥

रामेश्वर कम्बोज 'हिमांशु'
७३२, सदर बाजार, बरेली कैण्ट-२४३००४

मूँछें ऐंठें मुखिया जी

जब-जब झगड़े बढ़े गांव में, गए मुकदमे शहरों को,
दर-दर माँगे कर्ज गरीबी, खुशी हुए तब मुखिया जी।

लाल हवेली दुल्हन बन गई, गिरी झोपड़ी होरी की,
धनियाँ रोती-रोती घूमें, मूछें ऐंठें मुखिया जी।

जब से खुल गई बैंक गांव में, कर्जा मिला गरीबों को,
अब चूसेंगे खून कहां से, दुखी हो रहे मुखिया जी।

झूठा जुर्म लगा इतवारी पर, उसकी बीबी सुन्दर थी,
थानेदार घुसा घर-भीतर, दर्शक बन गए मुखिया जी।

गोबर गांव लौट आया है, जाने क्या-क्या कहता है,
उसके हाथ तने रहते हैं, डरने लगे हैं मुखिया जी।

कौशल पाण्डेय
हिन्दी अधिकारी, आकाशवाणी इलाहाबाद-२११००१

Scanned by CamScanner

समीक्षालय

एक जरूरी साक्षात्कार (भेंट वार्ता)

भेंटवार्ताकार–सतीशराज पुष्करणा,
भेंटकर्ता–राम यतन प्रसाद यादव
प्रकाशक–युवा रचनाकार जनवादी समिति
केवलातर मकसूदपुर, फतुहाँ–८०३२०१, पृष्ठ–५०

लघुकथा के विधागत स्वरूप को लेकर जिस तरह के विवाद खड़े हुए हैं और लघुकथाकारों ने लघुकथा को एक विधा के रूप में स्थापित करने के लिए जिस प्रकार से अथक संघर्ष किया है, यह उसी का परिणाम है कि आज लघुकथा ने अपनी एक स्पष्ट और सार्थक पहचान बना ली है। लघुकथा के विधागत स्वरूप को लेकर युवा लघुकथाकार श्री सतीशराज पुष्करणा से श्री राम यतन प्रसाद यादव का 'एक जरूरी साक्षात्कार' इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसमें लघुकथा के विभिन्न पहलुओं जैसे उसकी तकनीक, कथ्य, शिल्प, आकार और लघुकथा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर बारीकी के साथ प्रकाश डाला गया है। कुल मिलाकर पुस्तकाकार रूप में ली गयी यह भेंटवार्ता 'एक जरूरी साक्षात्कार' बन गयी है।

कवि मनीषी जानकी बल्लभ शास्त्री (आलोचना)

संपादक–राधे अज्ञानी, प्रकाशक–मानवपरिषद, मुजफ्फरपुर
मूल्य–सत्तर रुपये, प्रथम संस्करण–फर०–८६, पृष्ठ–२०२

साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी सूक्ष्म और गहरी पकड़ रखने वाले चर्चित, स्थापित और वरिष्ठ रचनाकार जानकी वल्लभ शास्त्री के साहित्यिक-योगदान की गाथा आज इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर दर्ज है। उनकी साहित्यिक साधना पर आलोचनात्मक दृष्टि से मानव परिषद, मुजफ्फरपुर द्वारा श्री राधे अज्ञानी के सम्पादन में प्रकाशित पुस्तक 'कवि मनीषी जानकीवल्लभ शास्त्री' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० प्रभाकर माचवे, त्रिलोचन शास्त्री, नन्द दुलारे बाजपेयी, कुंवर नारायण, डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० पारसनाथ सिंह जैसे चर्चित आलोचकों से लेकर अनेकों अन्य आलोचकों के आलोचनात्मक लेख, संस्मरण कवि मनीषी जानकीवल्लभ शास्त्री की रचनात्मक मूल्यवत्ता का सार्थक और सारगर्भित मूल्यांकन करते हैं। पुस्तक के अन्त में कवि मनीषी का जीवन परिचय व उनकी प्रकाशित, अप्रकाशित पुस्तकों का विवरण दिया गया है। मुद्रण की दृष्टि से पुस्तक खास प्रभाव नहीं छोड़ती है। मूल्य सत्तर रुपये आम पाठक को इस पुस्तक को पढ़ने से वंचित रख सकता है। लेकिन श्री राधे अज्ञानी ने उक्त पुस्तक प्रकाशित कर, साहित्य के सुधी पाठकों तक शास्त्री जी के कृतित्व और व्यक्तित्व को पहुँचाने का जो प्रयास किया है, उसकी सराहना किये बगैर नहीं रहा जा सकता है। ■

कागज़ की आग (कविता संग्रह)

कवि–श्री रामगोपाल वार्ष्णेय,
प्रकाशक–संकल्प साहित्यिक संस्था अलका इलैक्ट्रोनिक्स, सुभाष मार्ग, अलीगढ़।
प्रथम संस्करण–१९८७ मूल्य–बीस रुपये पृष्ठ–६४

ओजस्वी कवि रामगोपाल वार्ष्णेय अलीगढ़ की एक ऐसी संघर्षशील पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने मानव की रागात्मक चेतना के उस स्वरूप को पकड़ने की कोशिश की है, जो कोरे रूपात्मक सौन्दर्य में बंधकर नहीं चलता और न किसी नायिका का सौन्दर्य-प्रसाधन है। सौन्दर्य के कथित शृंगारी स्वरूप से अलग मानव के सुख-दुख, क्रोध-आक्रोश, द्रोह-विद्रोह की दृष्टि से ओत-प्रोत श्री रामगोपाल वार्ष्णेय का सार्थक और सारगर्भित 'कागज की आग' कविता संग्रह पाठक को एक ऐसी आग से साक्षात्कार कराता है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विद्रूपताओं, विसंगतियों को अपनी लपटों में लपेटकर राख बना देना चाहती है। काल और परिस्थितियों का बोध कराने वाली उक्त सग्रह की कविताएं स्वयं श्री रामगोपाल वार्ष्णेय के शब्दों में उनके रक्त और संस्कारों की देन हैं। कवि के संस्कार जब राष्ट्रीय चेतना और मानवीय सवेदनशीलता से सिक्त हैं तो राष्ट्र को विखंडित करने वाली शक्तियों के प्रति वह प्रहारात्मक रुख अख्तियार न करे, ऐसा हो ही नहीं सकता। कवि के सीधे और तीखे प्रहार का नमूना प्रस्तुत है–

'ओ देश द्रोहियो कान खोलकर सुन लो तुम।
अब कभी नही होगा भारत का बंटवारा।'

श्री रामगोपाल वार्ष्णेय की कविताएं, सच तो यह है कि आज के अलगाववादी माहौल में हमें उस राष्ट्रीय धारा से जोड़ती हैं, जिससे जुड़कर धर्म को कंगन नहीं, तलवार थमायी जाती है। ताकि धर्म के नाम पर मठाधीश बने तस्करों चोरों के सर कलम किये जा सकें। भय से भारत को मुक्त किया जा सके। सही अर्थों में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।

कवि द्वारा 'कागज की आग' कविता संग्रह में द्रोपदी, अर्जुन, सीता, कृष्ण, भीष्मपितामह, चाणक्य, जैसे जन-संस्कारित प्रतीकों के प्रयोग उक्त संग्रह की कविताओं की सम्प्रेषणशीलता उत्तरोत्तर बढ़ाने में सहज और स्वाभाविक भूमिका निभाते हैं। कुल मिलाकर 'कागज की आग' कविता संग्रह कथ्य व शिल्प की दृष्टि से अद्वितीय है। क्रान्तिकारियों के प्रति कवि का झुकाव उनकी ईमानदार रचनाधर्मिता का द्योतक है–

'नमन है उन शहीदों को, जिन्होंने सर कटाये हैं।
नमन रणबांकुरों को देश के जो काम आये हैं।'

Scanned by CamScanner

प्रकृति और पहचान (हिन्दी लघुकथा)

संपादक—रोशन लाल सुरीर वाला व डॉ० प्रभाकर शर्मा
प्रकाशक—गिरिनार प्रकाशन, पिलाजी गंज, महेसाना (उ० गुज०)
प्रथम संस्करण—१९८८, मकर संक्रान्ति, मूल्य—४५ रु०, पृ०—१२६

'लघुकथा युगबोध की अभिव्यक्ति है और नैतिक जीवन की अभिव्यक्ति है और नैतिक जीवन-मूल्यों की राख को अन्दर तक कुरेदती है। वह आलपिन की चुभन भी है और गन्ध की छुअन भी। दरअसल लघुकथा अनिवार्य शर्त रूप में न होकर गुण में है, शिक्षा में न होकर संस्कार में है। दृश्य में न होकर प्रभाव में है।' लघुकथा को लेकर दी गयी श्री रोशन लाल सुरीर वाला की उक्त टिप्पणी हिन्दी लघुकथा की प्रकृति और उसकी पहचान को खोजती हुई एक ऐसी सार्थक टिप्पणी है जो लघुकथा के मूल स्वरूप को समझने और परखने में काफी सहायक सिद्ध हो सकती है।

श्री रोशन लाल सुरीरवाला के सम्पादन में प्रकाशित पुस्तक हिन्दी लघुकथा 'प्रकृति और पहचान' लघुकथा के आन्तरिक एवं वाह्य स्वरूप की पहचान कराने में पूरी तरह एक सफल कृति है। डॉ० भगवान सहाय पचौरी, डॉ० ब्रजेश कुमार पालीवाल, डॉ० गोपालकृष्ण शर्मा, डॉ० वेद प्रकाश अमिताभ, डॉ० प्रभाकर शर्मा, रमेशराज, अतुलमोहन प्रसाद, कमल चोपड़ा के लघुकथा पर प्रकाशित आलेख लघुकथा की भाषिक संरचना, सत्योन्मुखी संवेदनशीलता, संघर्ष चेतना, व्यवस्था विरोध व यथार्थबोध की अभिव्यक्ति एवं उसकी समकालीन स्थिति पर व्यापक प्रकाश डालते हैं। श्री रतीलाल शाहीन का लेख लघुकथा की स्थिति के प्रति आग्रह-दुराग्रहों का परिणाम प्रतीत होता है। शंकर पुणतांबेकर से शम्भू दयाल की बातचीत लघुकथा की मौजूदा हालत पर सार्थक दृष्टि डालती है। श्री मदन मोहन उपेन्द्र द्वारा आयोजित परिचर्चा संग्रह को और ज्यादा सारगर्भित बनाती है।

लघुकथाओं में धर्म युद्ध (कमल चोपड़ा) गुफा (वेद प्रकाश अमिताभ), अपराधी (लखन अकेला), बंटवारा (अजय कुमार सक्सेना), प्यास (शराफत अली खान), गोली (राम निवास मानव), युक्ति (प्रेम सिंह नेगी), दृष्टि दोष (कुअर बेचैन), अवमूल्यन (डॉ० प्रेम कुमार), लंगड़ा (पवन शर्मा), बोझ (राज हौशंगाबादी), डबलबैड (दिनेश पालीवाल), सबूत (मंगत बादल) लघुकथाएं सामाजिक विसंगतियों, आर्थिक-असंतुलन एवं राजनीतिक कुचक्रों का तल्ख एवं सिसकन भरा ब्यौरा हैं। जो एक संवेदनशील पाठक के मन को ब्लेड की तरह चीरती चली जाती है। संग्रह की साज-सज्जा अच्छी है, पर ४५ रु० मूल्य अखरता है। मुद्रण संबन्धी त्रुटियां स्थान-स्थान पर खलती है। इस सबके बावजूद संग्रह पठनीय व स्वागत योग्य है। ●

जख्मों के गवाह (लघुकथा संग्रह)

संपादक—पृथ्वी नाथ पांडेय,

प्रकाशक—स्मृति प्रकाशन, १२४, शहरारा बाग, इलाहाबाद—२११००३,

संस्करण—प्रथम-८६ मूल्य--५० रुपये पृष्ठ--१६०

श्री पृथ्वी नाथ पांडेय के सम्पादन में प्रकाशित लघुकथा संग्रह 'जख्मों के गवाह' की अधिकांश लघुकथाएं मानव की आहत भावना, वैचारिता और संवेदनशीलता को जिस दर्दनाक तरीके से अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं, उस अभिव्यक्ति का आस्वादक पाठक पुस्तक के प्रथम चरण के प्रणय दर्शन से जहां दुख और वेदना के भावों से सराबोर हो उठता है, वहां पुस्तक का द्वितीय चरण नारी-यातना के प्रति पाठक को करुणा से पूरी तरह भर देता है। पाठक जब पुस्तक के तृतीय चरण तक आता है और वर्तमान व्यवस्था के तहत निर्दोष, असहाय वर्ग पर हुए अत्याचारों से साक्षात्कार करता है, तो वह आतताई अत्याचारी वर्ग के प्रति जुगुप्सा के भावों में डूबता चला जाता है। पुस्तक का चतुर्थ व पंचम चरण पाठक को विविध वैचारिक प्रक्रियाओं से इस तरह गुजारता हैं, मानो विचार उसके मस्तिष्क में चाकू की तरह तन और खुल रहे हों और उसके मानसिक धरातल को लगातार गोदते जा रहे हों।

पुस्तक की लघुकथाओं सम्बन्धी सम्पूर्ण रचन धर्मिता तीखी मारक और सत्योन्मुखी है, जिसे पृथ्वीनाथ पांडेय, पुष्पलता कश्यप, नन्दल हितैषी, सुरेश त्रस्त, रमेश बतरा, विष्णु प्रभाकर, सैली बलजीत, विक्रम सोनी, कमलेश भारतीय, आभासिंह जैसे अनेकों लघुकथाकारों ने बखूबी उभारा है। अतीत के पृष्ठों से उद्दृत पदमलाल पन्नालाल वख्शी, प्रेमचन्द, माखन लाल चतुर्वेदी आदि की लघुकथाएं भी यथार्थोन्मुखी और प्रासंगिक हैं।

श्री नरेश मेहता की भूमिका, पृथ्वीनाथ पांडेय की सम्पादकीय तथा 'लघुकथा : वैचारिक धरातल' के अन्तर्गत प्रकाशित लेख, लघुकथा को विभिन्न कोणों से परखने, स्थापित करने में कामयाब रहे हैं। मुद्रण साफ-सुथरा आकर्षक हैं। पुस्तक का ५० रु० मूल्य अखरता है।

Scanned by CamScanner

क्रान्तिमन्यु वीर शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद

कवि–ताराचन्द पाल बेकल,

प्रकाशक–शान्ति प्रकाशन ज्वालापुर, जिला—सहारनपुर,

मूल्य–पचहत्तर रुपये पृष्ठ–४६०

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहासपुरुष निस्संदेह हमारे वे पूज्यवर क्रान्तिकारी हैं, जिन्होंने भारत को अंग्रेजों की शोषक, अत्याचारी सत्ता से मुक्त कराने के लिये हंसते-हंसते प्राणोत्सर्ग कर डाला, जैसा कि कांग्रेस और उसके पिट्ठू मानते हैं कि भारत को आजाद कराने में काँग्रेस, सिर्फ कांग्रेस का ही योगदान है, यह इतिहास के साथ सबसे बड़ा और वीभत्स धोखा है, जबकि सच्चाई तो यह है कि कांग्रेस में दलाल और जनद्रोही चरित्र शुरू से ही भारत के धनकुबेरों और साम्राज्यवादी अंग्रेजों के बीच चालाकी और धूर्तता के साथ अपना कार्य कर रहा था। परिणाम सामने है–– आजादी के नाम पर यहां सेठ, चोर और तस्करों को आजादी मिली, कांग्रेसी नेताओं में कुर्सीलिप्सा, धन बटोरने की प्रवृत्ति, खुलकर सामने आयी। यदि इस देश को वास्तविक और शोषण विहीन, जन सापेक्ष रूप में कोई आजाद देखना चाहता था, तो वह हमारे क्रान्तिकारी ही थे। अतः अंग्रेजों के जमाने से कहीं अधिक गलीज, शोषक और अत्याचारी वर्तमान व्यवस्था के बदलने के लिये आज क्रान्तिकारी इतिहासपुरुषों की चारित्रिक गाथा एवं उनकी विचारधारा को, जन-जन तक सम्प्रोषित करने की बेहद आवश्यकता है।

क्रान्ति मन्यु वीर शिरोमणि 'चन्द्रशेखर आजाद' पर श्री ताराचन्द पाल बेकल ने काव्यात्मक स्वरूप में ४६० पृष्ठों में सजिल्द चित्ताकर्षक पुस्तक प्रकाशित कर एक पुण्य का कार्य किया है। उक्त पुस्तक की जितनी प्रशंसा की जाय, उतनी कम है। श्री ताराचन्द पाल बेकल के इस क्रान्तिकारी सृजन को शत्-शत् नमन। और उन्हीं के शब्दों में जन-जन को क्रान्तिधर्मा संदेश—

युग मेरे देश के, नर-वीर बल चुकने न पाये।
त्याग, तप, बलिदान की, यह भावना रुकने न पाये॥

रमेशराज

महलों में कैद रोशनी (गजल संग्रह)

कवि—श्याम बेबस,

प्रकाशक—इन्दु प्रकाशन, अचल तालाब, अलीगढ़,

मुल्य—बीस रुपये पृष्ठ—६०

सम्पर्क—२/२३ ए, रामघाट रोड, अलीगढ़

'महलों में कैद रोशनी' समकालीन परिवेश के गजलकार 'श्याम बेबस' की चुनी हुई पचपन गजलों का संग्रह हैं। रचनाकार की दृष्टि समाज के व्यापक पहलुओं पर टिकी है, जो उसकी सच्ची अनुभूति को सही मायने में प्रतिबिम्बित करती है।

पहली गजल में जीवन-व्यथा की अनुभुति है, तो दूसरी गजल की–'दर्द ढोते कटी उमर भइया, रोज पीते रहे जहर भइया' जैसी पंक्तियों में क्रमशः दर्द और जहर शब्दों के प्रयोग द्वारा कवि का जीवन के प्रति नेगेटिव एप्रोच का रूप देखने को मिलता हैं।

बीसवीं गजल में, भारत में पले व्यक्तियों की गुलामी की स्थिति की प्रस्तुति है। यदि इन गजलों को चार भागों में विभक्त कर दें तो कह सकते हैं कि पहले प्रकार की वे गजलें हैं जिसमें संत्रास, घुटन एवं निराशा का भाव हैं। दूसरी वे हैं, जिनमें मानव मन की रिक्तता एवं तिक्तता का स्वर है। तीसरी वे हैं जिनमें क्रान्ति की संवेदना की लहर है। और अन्तिम स्वरूप की गजलें व्यंग्यात्मक हैं जो वर्तमान व्यवस्था पर सीधे चोट करती है।

समकालीन परिस्थिति का यथार्थ रूप में अंकन करने वाली ये गजलें कुल मिलाकर रचनाकार की आन्तरिक संचेतना का एवं उसकी रचनाधर्मिता के प्रति लगाव की स्थिति का, अविराम प्रयास कहा जा सकता है।

मुद्रण साफ सुथरा एवं चित्ताकर्षक है। मूल्य की दृष्टि से भी पुस्तक अखरती नहीं है।

डॉ० सुबोध सारस्वत

जे० ४, जनक पुरी, अलीगढ

Scanned by CamScanner

लकीरें बोलती हैं (कविता संग्रह)

कवि–शोभाकर,
प्रकाशक–नीलम, भिवानी हरियाणा,
मूल्य पांच रुपये पृष्ठ–चौसठ

श्री शोभाकर के कविता संग्रह 'लकीरें बोलती हैं की अधिकांश कविताएं आदमी के दुख दर्द को अपने में समेटे हुए है, जो मानव के त्रासद हालातों से पाठक को बड़ी ही तीव्रता के साथ साक्षात्कार कराती हुई, उसे झकझोरती हैं।

कवि ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, स्वार्थपरता को बड़ी ही वेदना के साथ छुआ है। समाज में व्याप्त विसंगति असंगति, भयावहता के कोढ़ों की सर्जरी की है। दहेज का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"लम्बा, खूब लम्बा, घूंघट निकाल कर...
तुम्हें स्टोब के पास बैठना है।
......सिर झुकाकर रखना है।"

संग्रह की कविताओं में–'पारितोषिक, लकीरें बोलती है, मदारी का खेल, जीवन चित्र, स्टोव देवता, काले जादू का अन्त, विशेष प्रभावित करती हैं।

मानो शकुन्तला (कविता संग्रह)

कवि–भरत बेचैन,
प्रकाशक–आन्दोलन प्रकाशन,
मूल्य–दस रुपये

'मानो शकुन्तला सुकवि भरत बेचैन का प्रारम्भिक दौर की कविताओं का एक ऐसा संग्रह है, जिसमें किशोरमन की कल्पनाशीलता की मीठी-मीठी गन्ध का आभास पाठक वर्ग को प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मिलता है। कथ्य व शिल्प की दृष्टि से भी इनमें किशोरावस्था के ही दर्शन होते हैं। प्रौढ़ता की कमी स्वाभाविक ही है। फिर भी कहीं-कहीं कविता की यथार्थ अनुभूति के कवि में दर्शन हो जाते हैं–

अस्तु– जीवन पर मेरे चढ़ा, इतना ज्यादा कर्ज।
हर धड़कन हर सांस पर, नाम किसी का दर्ज।

Scanned by CamScanner

आयुध (लघुकथा संग्रह)

सम्पादक—कमल चोपड़ा,

प्रकाशक—अयन प्रकाशन महरौली, नई दिल्ली,

मूल्य—बीस रुपये पृष्ठ—सौ

अयन प्रकाशन महरौली नयी दिल्ली से, श्री कमल चोपड़ा के सम्पादन में 'आयुध' लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुआ है। संग्रह की सभी लघुकथाओं में अपने-अपने ढंग से साम्प्रदायिक उन्माद को अभिव्यक्त किया गया है। धर्माचार्यों द्वारा समाज को प्रासाद के रूप में चटायी गयी अफीम के नशे में धुत्त पड़े आदमी को, ये लघुकथाएं झकझोरती हैं, जगाती हैं, आदमी से आदमी की पहचान कराती हैं। जनता का दुख-दर्द बांटती हैं तथा आपसी तालमेल के द्वार खोलती हैं। निरन्तर हो रहे मानवीय मूल्यों के ह्रास पर अंकुश लगाने का प्रयास करती हैं।

संकलन में सम्पादक ने सआदत हसन मंटो की तेरह लघुकथाएं संकलित की हैं, जिनमें 'रियासत' लघुकथा बड़ी तीव्रता के साथ अपना प्रभाव छोड़ती है।

संग्रह में देश के चर्चित व युवा, रचनाकारों की कुल मिलाकर ५४ लघुकथाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिनमें कोढ़ (अन्जना अनिल) हत्या (कमल चोपड़ा) ईद मुबारक (डा० किशोर काबरा) कौम के गद्दार (बलराम अग्रवाल) ममता (जगदीश कश्यप) सुर्खियां (रमेश राज) हिन्दुओं का नहीं (आलोक भट्टाचार्य) पहले रोटी (मधुकांत), जूनून (पूरन मुद्गल), एक और हत्या (रतीलाल शाहीन), सूअर (रमेश बतरा), धर्मोन्माद (डा० स्वर्ण किरण) आदि लघुकथाएं इस संग्रह की विशेष उपलब्धि हैं।

'आयुध' अपने नाम को सार्थक करते हुए, धर्म के बाजीगरों, सत्ता लोलुपों की घिनौनी, व्यक्तिवादी मानसिकता की भली भांति कलई खोलता है। आयुध के आवरण हेतु करुणा निधान को साधुवाद। सौ पृष्ठीय संग्रह का बीस रुपये मूल्य ठीक है।

■

Scanned by CamScanner

वसन्त के इन्तजार में (कविता संग्रह)

कवि–वेद प्रकाश अमिताभ

प्रकाशक–इन्दु प्रकाशन, १४/१२ अचल तालाब, अलीगढ़-२०२००१

प्रथम संस्करण–१९८३ पृ०–६४ मूल्य–१५ रुपये

कवि का समाज-सापेक्ष चिन्तन कविता की रीढ़ होता है। मात्र शब्दों की नक्काशी कविता नहीं है। बल्कि उनकी सुन्दरतम प्रस्तुति कविता बनती है। और ये पूरा का पूरा सौन्दर्य उसके सत्यपक्ष में निहित होता है। कविता का सत्यपक्ष उसके समाजोन्मुखी होने में ही है।

इस सच्चाई को 'वसन्त के इन्तजार में' (संग्रह में) कवि वेदप्रकाश अमिताभ ने भी स्वीकारा है–"कविता रोशनी है / तमाशा दिखाने वाली नहीं / रास्ता दिखाने वाली।"

प्रस्तुत संग्रह में कवि की रचनाएं दो भागों में विभक्त हैं–मुक्त छंद एवं छन्दबद्ध (गीत एवं गजल)। पूरे संग्रह में कहीं भी कवि पर 'लचर' सोच और दिशाहीनता' का आरोप नहीं लगाया जा सकता। रचनाओं से साफ जाहिर होता है कि कवि की जीवन के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक एवं सूक्ष्म पकड़ है। समाज में व्याप्त विसंगतियें, कुरीतियों, कुप्रचलनों एवं व्यवस्था की कुनीतियों को कवि ने पूरी ईमानदारी के साथ महसूसा है और उसके खिलाफ आवाज भी उठाई है–

"भूख जब घुटनों के बल खड़ी होती है।
तब वह भरी हुई बन्दूक होती है।'

× × ×

पीना नहीं पड़ेगा सच्चाई को अब जहर।
हरगिज नहीं सहेंगे जो सुकरात सह गये।"

तथाकथित रचनाकारों, आलोचकों पर भी कवि ने बेलौस उंगली उठाई है–

"मौलिकता की प्रथम पंक्ति में
लोग खड़े हैं
पूंजी लेकर अनुवादों की
दृष्टि शून्य जो लिखते आलोचना।
कैसी विडम्बना ?"

विता में 'नये पन' के लिये नये-नये प्रयोग जहां शिल्प में नये आयाम खोलते हैं वहीं कविता की प्रभावक क्षमता को भी ऊर्जा प्रदान करते हैं लेकिन जब नये प्रयोग अपनी 'अर्थवत्ता' ही छोड़ देते हैं तो कविता का सारा कवितापन स्वाहा हो जाता है और 'नये पन' के नाम पर बचता है—'प्रयोग के लिए प्रयोग' इस तार्किकता को कवि ने अपनी प्रयोग धर्मा रचनाओं में बखूबी मद्देनजर रखा है। साम्प्रदायिकता के सन्दर्भ में 'पैंट्रोल' का प्रयोग कितना सार्थक, नवीन और उपयुक्त है—

"कल
तुमने मजाक में
एक जलती तीली फेंक दी
और पैंट्रोल में भीगा शहर
धू-धू जलने लगा।"

कुल मिलाकर पूरे संग्रह में कवि ने 'सोच' और 'अनुभव' की व्यापकता की प्रमाणिकता दी है। और सबसे महत्व की बात ये है कि कवि का रचना जगत नितान्त 'वैयक्तिकता' संकीर्णता' के दायरों को स्पर्श तक नहीं करता है। फिर भी कहीं-कहीं मुक्त छंद की रचनाएं वर्णन और वक्तव्य बनकर ही रह गयी हैं। साथ ही छंदबद्ध रचनाओं में भी कहीं-कहीं छन्द और लय टूटते हैं। यदि इन चीजों पर ध्यान न दिया जाय तो 'संग्रह' को स्तरीय संग्रहों में गिना जाना चाहिए।

'ख्वाहिशायत का कत्ल' (कविता-संग्रह)

कवि—महेश पंडित

प्रकाशन—अपना प्रकाशन, आर्य समाज मंदिर, मेहता पार्क रोड, एटा

प्रथम संस्करण—१९८७ मूल्य—बीस रुपये पृ०—१००

प्रस्तुत संग्रह में कवि की सैंतालीस मुक्त छंद कविताएं संग्रहीत हैं। कवि ने जहां चांद सितारों के घने जंगल में प्रेयसी के साथ विचरण किया है, प्रीति के समंदर में डुबकी लगायी हैं। वहीं युग की सच्चाई को तीखी अभिव्यक्ति भी प्रदान की है—

"जाने कैसा है
सभ्य युग का आदमी

Scanned by CamScanner

जो तन ढककर भी
भीतर तक नंगा है।"

इस घिनौनी व्यवस्था और आपा-धापी, व्यक्तिवादी, समाजघाती मूल्यों ने कवि को भीतर तक उद्वेलित किया है तभी वह चुनौती पूर्ण अभिव्यक्ति में व्यवस्था के सामने आया है–

"जरूरत है
अब आन्दोलन हो
उन अराजक मगरमच्छों के विरुद्ध
जो हर छोटी मछली को
निगल जाने तत्पर हैं।"

ये सच है कि संग्रह में कहीं-कहीं समय-सापेक्ष चिन्तन भी उभरा है लेकिन ये चिन्तन कवि की प्रतिबद्धता नहीं बन सका है। अधिकांश कविताएं कोई दिशा नहीं दे पाती हैं। कभी-कभी लगता है, जैसे किस्सा कहानी पढ़ रहे हों। तुकान्तों का मोह भी कवि को पूरी बात नहीं कहने देता हैं। एक ही 'कथन' की पुनरावृत्तियां एवं सम्प्रेषण का अभाव खटकता है। फिर भी जैसा कि कवि ने अपनी कविताओं को 'स्वप्निल कविताए'' नाम दिया हैं। इसकी प्रमाणिकता संग्रह भी पूरी-पूरी देता है।

—विजयपाल सिंह

गम बहुत सारे (गजल संग्रह)

कवि–कुन्दन सिंह सजल
प्रकाशक–विजय प्रकाशन, रायपुर सीकर (राज०)
मूल्य–बीस रुपये पृष्ठ–बहत्तर

श्री कुन्दन सिंह सजल वर्तमान व्यवस्था के विरोध में तिलमिलाते, छटपटाते हुए उस आदमी के बयान को अपने गजल संग्रह 'गम बहुत सारे' में बखूबी के साथ दर्ज करते नजर आते हैं, जिसकी खातिर भूख, गरीबी, बेकारी के दिनों में ऐसा कोई दिन नहीं आता जो उसे जरा-सी भी दिलासा दे सके, उसके होंटों के लिए मुस्कराहटें चुन सके बल्कि उसे हर बार यही लगता है–

'डूब गया फिर झाँसा देकर पश्चिम में हरजाई दिन।
मेरे लिये उगा ही कब है बनकर के शहनाई दिन।'

संग्रह की अधिकांश रचनाएं मानव-मन की कसक का बारीकी से परिचय देती हैं। बहत्तर पृष्ठीय संग्रह का बीस रुपये मूल्य अधिक लगता है।

विरासत दर्द की (काव्य संग्रह)

कवि—अजय अंचल

सम्पर्क—कटारीवालान, जयगंज, अलीगढ़

पृष्ठ—चौंसठ मूल्य—दस रुपये

अब अलीगढ़ में ऐसे युवा रचनाकारों की एक लम्बी सूची है जो वर्तमान व्यवस्था के विरोध में अपने आपको 'होम' कर देना चाहते हैं। इसी क्रम में तेवरी आन्दोलन से जुड़े युवा कवि अजय अंचल का प्रथम कविता संग्रह 'विरासत दर्द की' प्रकाशित हुआ है। संग्रह में कवि ने व्यंग्य और तेवरियों के माध्यम से जहाँ सड़ती गलती हमारी सांस्कृतिक परम्परा और नैतिक मूल्यों के उत्तरोत्तर पतन को एक सत्य-दृष्टि के साथ अभिव्यक्ति प्रदान की है, वहीं वह अपनी गजलों में प्रेम के कल्पना जगत का ताना-बाना बुनता नजर आता है।

उक्त संग्रह की गंगा-जमुनी धारा में डुबकी लगाने वाले पाठक को यदि एक अच्छे तैराक की तैरने जैसी सुखानुभूति का अनुभव होता है तो उसके लिये ऐसे खतरे भी नजर आते हैं जहाँ डूबने सांस रुकने, हाथ-पाँव फूलने जैसी स्थितियाँ आती, लगातार आती चली जाती हैं।

कवि की आन्तरिक छटपटाहट समाज को शोषण अत्याचार, अनाचार विहीन देखना चाहती है तथा जब वह अभिव्यक्ति का रूप ग्रहण करती है तो हमारी शिक्षा-प्रणाली से लेकर सरकारी मशीनरी पर प्रहार करना प्रारम्भ कर देती है।

अब तो सुविधा बढ़ गयी है डिग्रियों को गिरवीं रख।
लोन दे देगी तुझे सरकार तू रिक्शा चला॥

कुल मिलाकर यह प्रथम प्रयास शिल्पीय कमजोरियों के बावजूद स्वागत योग्य और संग्रहणीय है। संग्रह के कवि को उसकी मानवोन्मुखी संवेदना के प्रति सर्वत्र सराहा जाना चाहिए।

सुरेश त्रस्त
४६, आवास विकास कालोनी
सासनी गेट, अलीगढ़

एक–

सर पे जब छप्पर नहीं हैं
आँधियों के डर नहीं हैं।
हम भरें कैसे उड़ानें?
आसमाँ हैपर नहीं हैं।
बुत-परस्तों का शहर ये
और हम पत्थर नहीं हैं।
हँस रहे हैं लोग लेकिन
नैन किसके तर नहीं हैं।

–जगदीश श्रीवास्तव
गुप्तेश्वर मंदिर के सामने
अंदर किला, विदिशा

दो–

भ्रष्टाचारी फल रहे, फूल रहे बदमाश
जड़ें शोसकों की जमीं, सज्जन छीलें घास।
त्याग और बलिदान अब, शब्द-कोष में बन्द
खुश खुशामदी हो रहे, रोते सेवक-दास।
प्रजातंत्र के नाम का, जोर-शोर है खूब
पर यथार्थ में चल रहा, सामन्ती विश्वास।
सत्य, न्याय-पथ के पथिक, सभी हुए विकलांग
चमचों के चेहरे मगर, देते और उजास।

–गिरि मोहन 'गुरु'
द्वारा रघुनन्दन पाठक
२/५३ सु० कागज कारखाना
होशंगाबाद (म० प्र०)

तीन-

जेठ का तो काम था खिलते चमन को रौंदना,
अफसोस है सावन तलक अंगार बरसाने लगा,
तर्क से हर बात को था सिद्ध झूठे ने किया,
सत्य से पूछा गया, कमबख्त हकलाने लगा।
चीख जैसे ही उठी वह दब गयी जयघोष में,
दर्द ने आवाज की, अपराध कहलाने लगा।

–राजेन्द्र सोनी
भोपाल विश्व विद्यालय,
भोपाल–२६ (म० प्र०)

चार-

वे सुनें जो कैद सूरज को किये बैठे,
कल सुनहरी धूप के हकदार हम होंगे।
हर सदी पहचान अपनी छोड़ जाती है,
और इस पहचान के आधार हम होंगे।
साँप भी कल देख लेंगे आस्तीनों के,
भोर की पहली किरन का प्यार हम होंगे।
विषभरे जो घूमते सूखी शिराओं में,
जान लें कल वक्त की तलवार हम होंगे।

–डॉ० अजय पसून
७७, सरोज निकेतन,
हैल्थ स्क्वायर, लखनऊ-३

पांच–

एक ऊँचा तख्त जिस पर भेड़िया आसीन है,
और मन्दिर में सँपेरा मन्त्रणा में लीन है।
बात पगड़ी और टोपी की यहां तक बढ़ गयी,
नाचते षड्यंत्र बजती देशद्रोही बीन है।
दे रहे उपदेश में गुरू गोलियां उन्माद की,
आज पूजा के प्रसादों में मिली कोकीन है।

–ऋ० दे० शर्मा 'देवराज', मेरठ

छः–

इस कदर भी सँभाले गये,
आइने तोड़ डाले गये।
कठघरे में है सूरज खड़ा,
दिन हसीं धूप वाले गये।
गुलसिताँ के निगहबान ही,
सारी खुशबू चुरा ले गये।
सारे सपने सिकुड़ने लगे,
आँख से जब उजाले गये।
जिस्म के अब हर इक मोड़ पर,
जख्म के बुनते जाले गये।

–मधुर नज्मी,
श्री 'हरिऔध' कला भवन,
आजमगढ़-२७६००१

Scanned by CamScanner

सात--

आग अम्बर से बरसती यारो,
आँख पानी को तरसती यारो।
मन का आकाश इतना धूमिल है,
धूप हर रोज सुबकती यारो।
सारी खुशियाँ चुरा ली मौसम ने,
दृष्टि पतझर में अटकती यारो।
पाँव अपने फँसे अपरिचय में।
जान पहचान सिसकती यारो।

–कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'
प्लाट नं० ३८, विजय नगर,
कतार पुरा, २२ गोदाम,
जयपुर–३०२००६

आठ–

धूप की गाथा जमीं गाती नहीं,
क्यों सियाही मुल्क से जाती नहीं।
राजपथ को भोगने वाली नजर,
भूलकर फुटपाथ तक आती नहीं।
आपकी गायी प्रगति की गीतिका,
फाइलें हैं, गाँव की पाती नहीं।
माँग की तहजीब मत सिखलाइए,
चाहिए हक हमको खैराती नहीं।

–हृदय बेमिसाल,
पो० बॉ० नं० २ तुमसर,
मानेक नगर जिला–भण्डारा
(महाराष्ट्र) ४४१९१२

Scanned by CamScanner

नौ-

आज फिर बन सँवर कर बैठी है,,
भूख दिल में, जिगर में बैठी है।
जिन्दगी का सफर बना मुश्किल,
भूख हर रह गुजर में बैठी है।
दर्द बन जिन्दगी रही दिल में,
अश्क बनकर नजर में बैठी है।

—नूर मुहम्मद 'नूर'
सी०सी०एस० क्लेम्स लॉ सेक्शन
दक्षिण पूर्व रेलवे, ३ कोयला घाट
स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००१

दस-

दिन-दिन बदल रहे मानवीय आचरण,
हो गये असाध्य से जीवन-समीकरण।
प्रगति के नये-नये कीर्तिमान बन रहे,
हत्याएँ, चोरियाँ, बलात्कार, अपहरण।
अर्थहीन तथ्यहीन देश के भविष्य में
योजनाएं, उद्घाटन, मूर्ति के अनावरण।

—गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'
२३०, तरीनपुर,
सीतापुर-२६१००१

Scanned by CamScanner

ग्यारह-

कुछ और होगी स्याह अभी रात देखिए,
बिगड़ेंगे अभी और ये हालात देखिए।
अब देखता है ख्वाब पसीना गुलाब के,
हद हो गयी, कमजर्फ की औकात देखिए।
झुग्गी न झोंपड़ी, न घरोंदा बचा कहीं,
बुलडोजरों की आज करामात देखिए।
इन जलजलों को देखने का शौक पालिए,
दिन-रात गर्म खून की बरसात देखिए।

–राजवीर त्यागी,
डी-५, सै० ३ (ए), खेतड़ी नगर
(राज०) ३३३५०४

बारह-

देह पर महँका हुआ चंदन मिला,
आदमी का पर बिषैला मन मिला।
जिंदगी बहुमंजिली बिल्डिंग रही,
साँस लेने को कहाँ आँगन मिला।
हम गये जब भी समस्याओं के गाँव,
मुस्कराहट में छुपा क्रंदन मिला।
प्यास थी शब्दों में जिसके खून की,
आदमी में जोंक का चिन्तन मिला।
अब कहाँ माखन चखा घनश्याम ने,
रोटियों को ताकता बचपन मिला।

–सुरेश त्रस्त
४६, आ० वि० सासनी गेट
अलीगढ़–२०२००१

Scanned by CamScanner

एकदिवसीय कविता-शिविर सम्पन्न

खतौली १४ जनवरी। "हम एक ऐसे आस्था विहीन समाज में जी रहे हैं जिसमें न तो कोई नैतिक मूल्य शेष रह गया है और न मानवीय सरोकार की ही प्रतिष्ठा है। आस्था के इसी संकट के कारण कविता भी कई बार दिग्भ्रम की शिकार नजर आती है। ऐसी स्थिति में समाज की चेतना पर चोट करने वाली कविता तथा आस्था शील साहित्य का सृजन आवश्यक है।" ये विचार आचार्य कैलाश गौतम ने यहां एक दिवसीय कविता शिविर के प्रथम सत्र में 'हिन्दी कविता की वर्तमान स्थिति' पर बोलते हुए प्रकट किये। इस सत्र के अध्यक्ष मण्डल के दूसरे सदस्य डा० कृष्णचन्द्र गुप्त ने पक्षधरता के प्रश्न पर बोलते हुए दलीय अथवा राजनैतिक प्रतिबद्धता को निरस्त किया, परन्तु जनपक्षीय प्रतिबद्धता की वकालत करते हुए कविता में जनसामान्य की पीड़ा से जुड़ाव की आवश्यकता पर बल दिया। इससे पूर्व अपने उद्‌घाटन भाषण में प्रो० पीतम सिंह ने कविता की रचना प्रक्रिय पर विचार करते हुए उसे तकली पर तार निकालने की क्रिया बताया।

युवा कलमकार स्वर्गीय बृजपाल सिंह 'शौरभी' की पुण्य स्मृति को समर्पित इस सत्र में पढ़े गये पहले शोधपत्र में ऋचा अग्रवाल ने समकालीन कविता की उपलब्धियों और सीमाओं पर विचार करते हुए कहा कि वह भाषा के नये स्वरूप का संगठन कर रही है और सामाजिक भागीदारों के दायित्व को सफलता पूर्वक निभा रही है। जसबीर राणा ने अपने आलेख में हिन्दी कविता के बिविध आन्दोलनों की पड़ताल करते हुए तेवरी काव्यान्दोलन की सात वर्षीय यात्रा का मूल्यांकन किया राजनैतिक आर्थिक अव्यवस्था के विरुद्ध तीव्र अभियान के रूप में सामने आयी है। तुलसी नीलकंठ ने विकास के नये दौर के दौरान गौण होती जा रही कविता की प्रासंगिकता का प्रश्न उठाया तो पवन कुमार पवन ने विषमता और शोषण के विरुद्ध लड़ाई के सबसे कारगर हथियार के रूप में जुझारू मानसिकता की कविता की वकालत की। इस सत्र का संचालन तेवरी काव्यान्दोलन के प्रस्तुत कर्ता ऋ० दे० शर्मा 'देवराज' ने किया।

शिविर के दूसरे सत्र में सभी लगभग पचास प्रतिनिधि कार्यशाला में सम्मिलित हुए और तीसरे सत्र में कवि गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता वशिष्ठ कवि राजेन्द्र जैन 'अमित' ने की तथा संचालन व्यंग्यकार जगदीश 'सुधाकर' ने किया। चर्चा एवं बहस में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों में हरिराम चमचा, कस्तूर स्नेही, प्रीतमसिंह 'प्रियतम', ब्रह्मपाल किंकर, प्रदीप जैन, धीरज मणि, हरिकृष्ण, असलम, प्रकाश सूना, रियाजुद्दीन सागर, महावीर तुषार, हरिशंकर जोषी तथा गौहर तमन्नाई के नाम उल्लेखनीय हैं।

जगदीश सुधाकर
महासचिव—'साहित्य मन्थन', खतौली

Scanned by CamScanner

साहित्यकार-सम्मेलन सम्पन्न

२ जुलाई '८८ को तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति मऊ-शेरपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर ग्रामीण परिवेश में साहित्यकार-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह का विधिवत् उद्घाटन किया डा० सुरेन्द्र प्रसाद ने। भागीरथी के संपादक डा० परमेश्वर गोयल ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की तथा उन्मुक्त के प्रधान संपादक श्री सीताराम 'शेरपुरी' ने इसका सफल संचालन किया।

सम्मेलन के प्रथम सत्र 'विचार-गोष्ठी' के मुख्य अतिथि डा० सुरेन्द्र प्रसाद थे तथा गोष्ठी का विषय था—"श्रमजीवी साहित्य के प्रति पाठकीय संवेदन शून्यता का सवाल।" गोष्ठी की अध्यक्षता हस्ताक्षर के संपादक श्री जोगेश्वर जख्मी ने की तथा संचालन युवा साहित्यकार श्री अंकिचन (सं० गूंज) ने किया। आलेख पाठकों के बीच गर्मागर्म लेकिन सार्थक बहसों के बाद इस सत्र की समाप्ति हुई।

सम्मेलन के दूसरे सत्र में आयोजित लघुकथा-गोष्ठी में "यथार्थवादी दृष्टिकोण और मौजूदा लेखन" विषय पर कई आलेख पाठ किये गये तथा दर्जनों लघुकथाकारों ने अपनी-अपनी लघुकथाएं सुनाईं। इस गोष्ठी की अध्यक्षता श्री एन० एच० रिजवी ने की तथा संचालन श्री वैद्यनाथ पंडित प्रभाकर ने किया। इस गोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री निरंजन थे।

सम्मेलन के तीसरे सत्र में एक सरस कवि-सम्मेलन का आयोजन आदर्श बाल विकास विद्यालय (मऊ-बाजार) के मनोरम प्रांगण में किया गया। कवि-सम्मेलन के मुल्य अतिथि थे—वयोवृद्ध साहित्यकार श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मुकुर'। इसकी अध्यक्षता श्री युगल ने की तथा इसका सफल संचालन किया युवा कवि श्री ईश्वर करुण ने। कवियों एवं शायरों की स्वर लहरी से देर रात तक यह ग्राम्यांचल झंकृत होता रहा। गामीण इस सम्मेलन को एक धरोहर के रूप में याद रखेंगे। इस कवि-सम्मेलन में लगभग तीन दर्जन कवियों ने काव्य-पाठ कर पूरी बस्ती को काव्यमय बना दिया।

सम्मेलन का अंतिम सत्र 'अभिनन्दन समारोह' था। त० सां० चेतना समिति मऊ-शेरपुर ने सर्वश्री लक्ष्मी नारायण शर्मा मुकुर', अमरनाथ सिंह 'मोही', डा० परमेश्वर गोयल, जोगेश्वर जख्मी, निरंजन एवं युवा शायर शयूम जावेद को साहित्य-साधना के लिए सम्मानित किया।

इस साहित्यकार-सम्मेलन के अवसर पर एक अखिल भारतीय पुस्तक एवं लघु पत्रिका-प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

अन्त में श्री सीताराम शेरपुरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रस्तुति : अभय
समस्तीपुर, (बिहार)

लघुकथाएँ

राजनीति

एक आदमी की दूसरे आदमी से कहा-सुनी हो गई। बढ़ते-बढ़ते बात हाथापाई तक जा पहुंची। पहले आदमी के हाथ लाठी लग गई जिससे उसने दूसरे आदमी पर भरपूर वार किये। दूसरा घायल होकर गिर पड़ा एवं छटपटाने लगा। पहला भाग निकला, दूसरे ने हाय-तौबा मचाई और आने-जाने वालों से मदद की गुहार-पुकार की। आदमी और आदमियत के नाते—वास्ते दिये, रहम खाने की दुआ दी। किसी ने कान नहीं धरे। आखिर वह चिल्लाया—मैं हरिजन हूं, मुझे बचाओ, मैं हरि···जन···

इस पर आदमी नहीं उसकी मदद के लिए अनेकों राजनैतिक पार्टियां आ पहुँची।

कमलेश भारतीय

शारदा मुहल्ला, नवांशहर दोआबा (पंजाब) १४४५१४

आग्रह

"सुनो ! माँ का पत्र आया है। कुछ दिनों के लिए घर बुलाया है। बच्चों की छुट्टियां हैं; कुछ दिनों के लिए हो आते हैं।" पति ने कहा।

"मैं नहीं जाऊंगी उस नरक में सड़ने के लिए। बहुत गन्दा है तुम्हारा गांव और उसके रहने वाले लोग।" पत्नी ने चिड़चिड़े और तीखे स्वर में प्रत्युत्तर दिया।

"मगर सुनो तो ! मां ने लिखा है कि, इस साल फसल अच्छी आयी है। बहू को लेकर आना उसके गले की चेन बनवानी है···फिर···हम लोग गेहूं भी ले आएंगे।" पति ने कुछ हिसाब जोड़ते हुए कहा।

अब आप कह रहे हैं, और माँ का इतना आग्रह है तो चलिये मिल आते हैं।" मन की खुशी को छुपाते हुए धीमे स्वरों में पत्नी ने सहमति दे दी।

सतीश राठी

२१२, उषानगर, (स्मृति मार्ग) इन्दौर-४५२००६

लोमड़ी

एक बार लोमड़ी चुनाव में जीत गई। अंगूर खट्टे नहीं रहे और मीठे अंगूर खाने लगी तो खाती ही रही। दूसरे जानवर बोले हमें भी अंगूर खाने का अधिकार है। जनतंत्र में सभी समान हैं। वह नहीं मानी। वे तुल गए असहयोग पर।

मामला पंच फैसले को सुपुर्द हुआ। पंचायत ने निर्णय दिया कि लोमड़ी ने अंगूरों पर एकाधिकार कर लिया है और समानता के सिद्धांत की अवमानना की है अतः उसे लोकतंत्र की परम्परा का निर्वाह कर पद त्याग देना चाहिए।

लोमड़ी अपील में गई। वह कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थी। उसने संसद की मीटिंग बुलाई और पंचायतों के अधिकारों को सीमित कर दिया।

भागीरथ

सी-३ ए/८२ फेज दो, रावतभाटा (कोटा) राज० ३२३३०५

Devlok-9 पृ० 37

Scanned by CamScanner

क्या आप जानना चाहते हैं ?

- काव्य के सम्बन्ध में रस की व्याख्या विभाव, संचारी भाव, स्थायी भाव, अनुभावों को लेकर की गयी है।
- लेकिन इन भावों का निर्माण किस प्रकार होता है ?
- क्या भाव के निर्माण की प्रक्रिया किसी विचार की देन होती है ?
- क्या भाव से पहले आश्रय के मन में कोई विचार उद्‌बुद्ध होता है और उस विचार के अनुरूप किसी भाव का निर्माण होता है ?
- हृदय रक्त संचार का एक साधन मात्र है। जिसमें न तो किसी प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं और न वह किसी प्रकार की अपने आस-पास के परिवेश से संवेदना ग्रहण करता है। हृदय की समस्त कार्य प्रणाली मात्र आश्रय के अनुभावों को ही स्पष्ट करती है। तब यह कथित 'सहृदयता' क्या है ? इससे बुद्धितत्व का कितना और कैसा सम्बन्ध है ?
- किसी भी आश्रय के मन में संस्कार रूप में स्थायित्व भावों का होता है अथवा विचारों का ?

ऐसे ही ढेर सारे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए रस विषयक एक नितांत मौलिक कृति—

कविता क्या है ?

(शीघ्र प्रकाश्य)

लेखक—रमेशराज मूल्य—साठ रुपये

सार्थक-सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ़

बुक-पोस्ट/मुद्रित सामग्री

सेवा में,

श्री उग्रशरण सिंह

6/15, ~~अशोक नगर~~,

~~नयी दिल्ली~~

संपादक/मुद्रक/प्रकाशक : रमेशराज द्वारा शारदा प्रिन्टर्स, 'राठी भवन' सासनी गेट अलीगढ़ में छपवाकर, १५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़ से प्रकाशित।

Scanned by CamScanner